REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 10 | JULY - 2026

बदायूँ जनपद में महिला साक्षरता का स्थानिक प्रतिरूप: एक भौगोलिक अध्ययन

विमल कुमार
शोधार्थी, भूगोल विभाग कला संकाय, नेहरू ग्राम भारती(मानित विश्वविद्यालय)

सार (Abstract)

महिला साक्षरता किसी भी समाज के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास का एक महत्वपूर्ण सूचक है। यह केवल महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि का द्योतक नहीं, बल्कि परिवार के स्वास्थ्य, पोषण, आर्थिक सहभागिता, लैंगिक समानता तथा सतत विकास से भी प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है। भारत में स्वतंत्रता के पश्चात महिला शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, किन्तु क्षेत्रीय एवं सामाजिक असमानताएँ आज भी विद्यमान हैं। विशेष रूप से उत्तर प्रदेश जैसे विशाल एवं जनसंख्या बहुल राज्य में महिला साक्षरता का वितरण अत्यंत असमान है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश का बदायूँ जनपद उन जनपदों में सम्मिलित है जहाँ महिला साक्षरता राज्य एवं राष्ट्रीय औसत से निम्न रही है तथा विभिन्न विकासखण्डों के मध्य भी उल्लेखनीय स्थानिक विषमता परिलक्षित होती है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में बदायूँ जनपद की महिला साक्षरता के स्थानिक प्रतिरूप का भौगोलिक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में जनगणना 2011, जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, UDISE+, NFHS-5 तथा अन्य द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों का उपयोग किया गया है। महिला साक्षरता की क्षेत्रीय विषमता को विकासखण्ड स्तर पर समझने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी, तुलनात्मक विश्लेषण तथा भौगोलिक व्याख्या का सहारा लिया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद के नगरीय एवं प्रशासनिक दृष्टि से विकसित क्षेत्रों में महिला साक्षरता अपेक्षाकृत अधिक है, जबकि ग्रामीण, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़े विकासखण्डों में इसका स्तर निम्न है। सामाजिक परंपराएँ, आर्थिक निर्धनता, विद्यालयों की उपलब्धता, परिवहन, बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता तथा महिला सुरक्षा जैसे कारक इस स्थानिक भिन्नता को प्रभावित करते हैं।

अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि महिला साक्षरता में सुधार के लिए केवल विद्यालयों की संख्या बढ़ाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि सामाजिक चेतना, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुरक्षित आवागमन, डिजिटल शिक्षा तथा समुदाय आधारित कार्यक्रमों को समान महत्व देना आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन नीति-निर्माताओं एवं शोधकर्ताओं के लिए महिला शिक्षा की क्षेत्रीय विषमताओं को समझने तथा लक्ष्यित योजनाओं के निर्माण में उपयोगी सिद्ध होगा।

कुंजी शब्द: महिला साक्षरता, स्थानिक प्रतिरूप, भौगोलिक अध्ययन, बदायूँ जनपद, लैंगिक असमानता, शिक्षा, क्षेत्रीय विषमता।

1. परिचय

शिक्षा मानव विकास की आधारशिला है तथा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक उन्नति का मूल आधार मानी जाती है। शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण एवं निर्णय क्षमता का विकास करती है तथा उसे समाज के सक्रिय एवं उत्तरदायी नागरिक के रूप में स्थापित करती है। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) में गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति में महिला शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षित महिला न केवल स्वयं सशक्त होती है, बल्कि परिवार एवं समाज के विकास में भी निर्णायक योगदान देती है।

महिला साक्षरता को किसी भी समाज की सामाजिक प्रगति का प्रमुख संकेतक माना जाता है। अनेक अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि जहाँ महिला साक्षरता का स्तर उच्च होता है, वहाँ मातृ एवं शिशु मृत्यु दर अपेक्षाकृत कम होती है, स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग अधिक होता है, परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता बढ़ती है तथा बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन मिलता है। इसके विपरीत निम्न महिला साक्षरता वाले क्षेत्रों में गरीबी, कुपोषण, बाल विवाह तथा लैंगिक असमानता जैसी समस्याएँ अधिक पाई जाती हैं।

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा के सार्वभौमिकरण हेतु अनेक योजनाएँ संचालित की गईं, जिनमें राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, सर्व शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ तथा समग्र शिक्षा अभियान प्रमुख हैं। इन कार्यक्रमों के फलस्वरूप महिला साक्षरता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, किन्तु राज्यों एवं जिलों के मध्य अभी भी व्यापक असमानता विद्यमान है। विशेष रूप से उत्तर प्रदेश के कई जिलों में महिला साक्षरता का स्तर राष्ट्रीय औसत से कम है।

बदायूँ जनपद पश्चिमी उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख कृषि प्रधान जिला है। यहाँ की सामाजिक संरचना, आर्थिक स्थिति, ग्रामीण प्रधानता तथा पारंपरिक सामाजिक मान्यताएँ महिला शिक्षा को प्रभावित करती हैं। जनगणना 2011 के अनुसार जनपद की महिला साक्षरता दर राज्य एवं राष्ट्रीय औसत से कम रही, जो इस क्षेत्र में शिक्षा संबंधी चुनौतियों की ओर संकेत करती है। साथ ही विकासखण्डों के मध्य भी महिला साक्षरता का वितरण समान नहीं है। कुछ विकासखण्डों में शिक्षा सुविधाओं, नगरीकरण एवं आर्थिक विकास के कारण महिला साक्षरता अपेक्षाकृत अधिक है, जबकि दूरस्थ एवं पिछड़े क्षेत्रों में इसका स्तर निम्न पाया जाता है।

भूगोल का मूल उद्देश्य केवल तथ्यों का वर्णन करना नहीं, बल्कि उनके स्थानिक वितरण एवं क्षेत्रीय विषमताओं की व्याख्या करना है। इसी दृष्टिकोण से प्रस्तुत अध्ययन बदायूँ जनपद में महिला साक्षरता के स्थानिक प्रतिरूप का विश्लेषण करता है तथा उन भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों की पहचान करता है जो महिला साक्षरता को प्रभावित करते हैं।

यह अध्ययन स्थानीय स्तर पर शैक्षिक नियोजन, संसाधनों के समुचित वितरण तथा महिला शिक्षा को बढ़ावा देने वाली नीतियों के निर्माण में उपयोगी सिद्ध होगा।

2. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

महिला साक्षरता पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक अध्ययन किए गए हैं। इन अध्ययनों में शिक्षा के क्षेत्रीय वितरण, लैंगिक असमानता तथा सामाजिक-आर्थिक कारकों के प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

शर्मा एवं सिंह (2018) ने उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में महिला साक्षरता के स्थानिक वितरण का अध्ययन करते हुए पाया कि नगरीकरण, आर्थिक विकास तथा शिक्षा अवसंरचना का महिला साक्षरता से सकारात्मक संबंध है। जिन क्षेत्रों में विद्यालयों की उपलब्धता तथा परिवहन सुविधाएँ बेहतर थीं, वहाँ महिला साक्षरता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया।

कुमार (2019) ने ग्रामीण भारत में महिला शिक्षा की बाधाओं का विश्लेषण करते हुए बताया कि गरीबी, सामाजिक रूढ़िवादिता, बाल विवाह तथा लैंगिक भेदभाव महिला शिक्षा के प्रमुख अवरोधक हैं। अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया कि आर्थिक सहायता एवं सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम महिला साक्षरता में सुधार के प्रभावी माध्यम हैं।

Government of India (Census 2011) के अनुसार भारत में महिला साक्षरता में निरंतर वृद्धि हुई है, किन्तु राज्यों एवं जिलों के मध्य उल्लेखनीय असमानता अभी भी विद्यमान है। उत्तर प्रदेश के अनेक जिलों में महिला साक्षरता राष्ट्रीय औसत से कम दर्ज की गई है।

NFHS-5 (2019–21) के निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षा का प्रत्यक्ष संबंध मातृ स्वास्थ्य, पोषण, संस्थागत प्रसव तथा परिवार नियोजन से है। शिक्षित महिलाओं में स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता एवं निर्णय क्षमता अधिक पाई गई।

UDISE+ (2022–23) के आँकड़े दर्शाते हैं कि विद्यालयों में बालिकाओं के नामांकन में वृद्धि हुई है, किन्तु माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यालय छोड़ने की समस्या अभी भी अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यमान है।

UNESCO (2023) ने अपनी वैश्विक शिक्षा रिपोर्ट में उल्लेख किया है कि लैंगिक समानता की प्राप्ति के लिए केवल विद्यालयों तक पहुँच पर्याप्त नहीं है, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता, सुरक्षित वातावरण, डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता तथा सामाजिक समर्थन भी समान रूप से आवश्यक हैं।

उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश शोध राज्य अथवा राष्ट्रीय स्तर पर केंद्रित रहे हैं। बदायूँ जनपद के विकासखण्ड स्तर पर महिला साक्षरता के **स्थानिक प्रतिरूप** का विस्तृत भौगोलिक विश्लेषण अपेक्षाकृत कम उपलब्ध है। यही शोध-अंतर (Research Gap) प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता को सिद्ध करता है। इस शोध में महिला साक्षरता के क्षेत्रीय वितरण, स्थानिक विषमता तथा उससे जुड़े सामाजिक-आर्थिक एवं भौगोलिक कारकों का समग्र विश्लेषण किया जाएगा।

3. अध्ययन क्षेत्र (Study Area)

उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में स्थित बदायूँ जनपद ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा कृषि की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण जनपद है। इसका गठन वर्ष 1838 में किया गया था तथा यह बरेली मण्डल के अंतर्गत आता है। भौगोलिक दृष्टि से यह जनपद लगभग **27°29′ से 28°30′ उत्तरी अक्षांश** तथा **78°46′ से 79°50′ पूर्वी देशांतर** के मध्य स्थित है। जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग **5,168 वर्ग किलोमीटर** है। इसके उत्तर में शाहजहाँपुर, पूर्व में हरदोई, दक्षिण में कासगंज तथा पश्चिम में सम्भल एवं अमरोहा जनपद स्थित हैं।

गंगा एवं रामगंगा नदियाँ इस जनपद की प्रमुख जलधाराएँ हैं, जिन्होंने यहाँ के मैदानी भू-भाग, जलोढ़ मिट्टी तथा कृषि प्रणाली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जनपद की स्थलाकृति सामान्यतः समतल है तथा समुद्र तल से औसत ऊँचाई लगभग 160–180 मीटर के मध्य है। जलवायु उपोष्णकटिबंधीय मानसूनी प्रकार की है, जिसमें ग्रीष्म ऋतु गर्म, शीत ऋतु शीतल तथा वर्षा का अधिकांश भाग दक्षिण-पश्चिम मानसून से प्राप्त होता है।

आर्थिक दृष्टि से बदायूँ एक कृषि प्रधान जनपद है। गेहूँ, धान, गन्ना, आलू एवं दलहन प्रमुख फसलें हैं। ग्रामीण जनसंख्या का बड़ा भाग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि एवं उससे संबंधित गतिविधियों पर निर्भर है। औद्योगिक विकास सीमित होने के कारण रोजगार के अवसर अपेक्षाकृत कम हैं, जिसका प्रभाव शिक्षा विशेषकर महिला शिक्षा पर भी परिलक्षित होता है।

जनगणना 2011 के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या लगभग **37 लाख** थी, जिसमें ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात अत्यधिक है। महिलाओं की भागीदारी कृषि एवं घरेलू कार्यों में अधिक होने के बावजूद शिक्षा एवं औपचारिक रोजगार में उनकी भागीदारी अपेक्षाकृत कम पाई जाती है। सामाजिक संरचना में अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा मुस्लिम समुदाय का उल्लेखनीय प्रतिशत है, जिससे शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता देखने को मिलती है।

प्रशासनिक दृष्टि से जनपद अनेक विकासखण्डों में विभाजित है। प्रत्येक विकासखण्ड में महिला साक्षरता की स्थिति भिन्न-भिन्न है, जो शिक्षा अवसंरचना, नगरीकरण, आर्थिक विकास, सामाजिक जागरूकता तथा परिवहन सुविधाओं के अनुसार परिवर्तित होती है। यही क्षेत्रीय विविधता इस अध्ययन का प्रमुख आधार है।

महिला साक्षरता का अध्ययन विकासखण्ड स्तर पर करने से यह ज्ञात किया जा सकता है कि कौन-से क्षेत्र अपेक्षाकृत विकसित हैं तथा किन क्षेत्रों में विशेष शैक्षिक हस्तक्षेप की आवश्यकता है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र न केवल भौगोलिक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक एवं विकासात्मक दृष्टि से भी इस शोध के लिए अत्यंत उपयुक्त है।

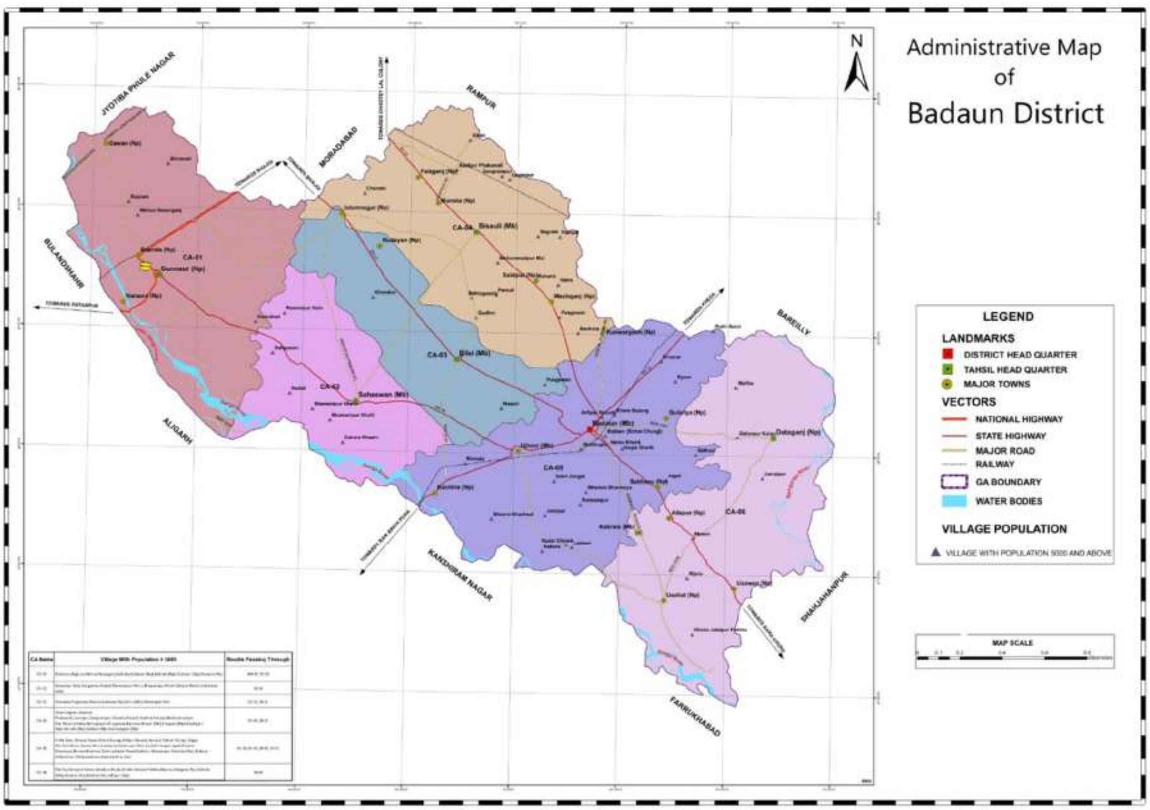

4. शोध समस्या (Statement of the Problem)

शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम माना जाता है, किन्तु बदायूँ जनपद में महिला साक्षरता का स्तर अभी भी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाया है। जनपद के विभिन्न विकासखण्डों में महिला साक्षरता का वितरण समान नहीं है। कुछ क्षेत्रों में विद्यालयों, परिवहन, आर्थिक अवसरों तथा सामाजिक जागरूकता के कारण महिला साक्षरता का स्तर अपेक्षाकृत उच्च है, जबकि अनेक ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में यह अत्यंत निम्न पाया जाता है।

इन स्थानिक विषमताओं के कारण महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य, रोजगार तथा सामाजिक विकास की प्रक्रिया प्रभावित होती है। इसलिए यह आवश्यक है कि महिला साक्षरता के क्षेत्रीय प्रतिरूप का भौगोलिक विश्लेषण कर उन कारकों की पहचान की जाए जो इन विषमताओं के लिए उत्तरदायी हैं।

5. अध्ययन के उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. बदायूँ जनपद में महिला साक्षरता की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।
2. विकासखण्ड स्तर पर महिला साक्षरता के स्थानिक प्रतिरूप का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में महिला साक्षरता की तुलना करना।
4. महिला साक्षरता को प्रभावित करने वाले सामाजिक, आर्थिक एवं भौगोलिक कारकों का विश्लेषण करना।
5. महिला साक्षरता में क्षेत्रीय असमानताओं के कारणों की पहचान करना।
6. महिला शिक्षा के विकास हेतु नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

6. अनुसंधान प्रश्न (Research Questions)

1. क्या बदायूँ जनपद के सभी विकासखण्डों में महिला साक्षरता समान है?
2. किन क्षेत्रों में महिला साक्षरता सर्वाधिक एवं न्यूनतम है?
3. महिला साक्षरता को प्रभावित करने वाले प्रमुख सामाजिक एवं आर्थिक कारक कौन-कौन से हैं?
4. क्या नगरीकरण एवं शिक्षा अवसंरचना महिला साक्षरता को प्रभावित करते हैं?
5. क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने हेतु कौन-सी नीतियाँ प्रभावी हो सकती हैं?

7. अनुसंधान पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive), विश्लेषणात्मक (Analytical) तथा स्थानिक (Spatial) अनुसंधान पद्धति पर आधारित है।

प्रथम चरण में महिला साक्षरता से संबंधित आँकड़ों का संकलन किया गया। इसके पश्चात विकासखण्डवार आँकड़ों का वर्गीकरण एवं सारणीकरण किया गया। प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण कर स्थानिक वितरण की प्रवृत्तियों का अध्ययन किया गया। तत्पश्चात GIS के माध्यम से महिला साक्षरता के क्षेत्रीय प्रतिरूप का मानचित्रण किया गया, जिससे उच्च, मध्यम एवं निम्न महिला साक्षरता वाले क्षेत्रों की पहचान की जा सके।

अंत में सामाजिक, आर्थिक एवं भौगोलिक कारकों के साथ महिला साक्षरता के संबंध का विश्लेषण कर निष्कर्ष एवं नीतिगत सुझाव प्रस्तुत किए गए।

8. परिणाम एवं विश्लेषण (Results and Discussion)

बदायूँ जनपद में महिला साक्षरता का स्थानिक प्रतिरूप

महिला साक्षरता किसी भी क्षेत्र के सामाजिक विकास, मानव संसाधन की गुणवत्ता तथा लैंगिक समानता का एक महत्त्वपूर्ण सूचक है। जनगणना 2011 के अनुसार बदायूँ जनपद की कुल साक्षरता दर **52.01 प्रतिशत** है, जिसमें पुरुष साक्षरता **61.40 प्रतिशत** तथा महिला साक्षरता **41.16 प्रतिशत** दर्ज की गई है। पुरुष एवं महिला साक्षरता के मध्य **20.24 प्रतिशत अंकों** का अंतर यह स्पष्ट करता है कि जनपद में लैंगिक शैक्षिक असमानता अभी भी एक गंभीर चुनौती बनी हुई है।

यदि 1991 से 2011 तक की प्रवृत्ति का अध्ययन किया जाए तो स्पष्ट होता है कि पिछले दो दशकों में महिला साक्षरता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्ष 1991 में महिला साक्षरता केवल **12.82 प्रतिशत** थी, जो वर्ष 2001 में बढ़कर **26.73 प्रतिशत** तथा वर्ष 2011 में **41.16 प्रतिशत** हो गई। अर्थात् 1991–2011 के बीच महिला साक्षरता में **28.34 प्रतिशत अंकों** की वृद्धि हुई। यह वृद्धि सर्व शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना तथा बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने वाली विभिन्न सरकारी योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव दर्शाती है। फिर भी महिला साक्षरता राज्य एवं राष्ट्रीय औसत की तुलना में अपेक्षाकृत निम्न बनी हुई है।

तालिका 1 : बदायूँ जनपद में साक्षरता की प्रवृत्ति (1991–2011)

वर्ष	पुरुष (%)	महिला (%)	कुल (%)	लैंगिक अंतर
1991	33.96	12.82	24.64	21.14
2001	50.27	26.73	39.60	23.54
2011	61.40	41.16	52.01	20.24

स्रोत: जिला सांख्यिकी पत्रिका, बदायूँ, अर्थ एवं संख्या विभाग, उत्तर प्रदेश शासन, 2023।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 1991–2001 के दशक में महिला साक्षरता में लगभग **13.91 प्रतिशत अंकों** की वृद्धि हुई, जबकि 2001–2011 के दौरान इसमें **14.43 प्रतिशत अंकों** की वृद्धि दर्ज की गई। यद्यपि महिला साक्षरता की वृद्धि दर उत्साहजनक रही है, तथापि लैंगिक अंतर अभी भी 20 प्रतिशत से अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि शैक्षिक अवसरों तक महिलाओं की समान पहुँच सुनिश्चित करने के लिए अभी और प्रयासों की आवश्यकता है।

विकासखण्डवार महिला साक्षरता का स्थानिक विश्लेषण

बदायूँ जनपद के 15 विकासखण्डों में महिला साक्षरता का वितरण समान नहीं है। यह स्थानिक विषमता जनपद के विभिन्न भागों में सामाजिक-आर्थिक विकास, नगरीकरण, शिक्षा अवसंरचना तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों में विद्यमान अंतर को प्रतिबिंबित करती है।

तालिका 2 : विकासखण्डवार महिला साक्षरता (2011)

विकासखण्ड	**महिला साक्षरता (%)**	**जनपद औसत (41.16%) से स्थिति**	**रैंक**
जगत	42.77	अधिक	1
दातागंज	42.64	अधिक	2
म्यांऊ	42.39	अधिक	3
उझानी	41.80	अधिक	4
वजीरगंज	41.69	अधिक	5
बिसौली	40.30	कम	6
सालारपुर	39.25	कम	7
आसफपुर	39.01	कम	8
समरेर	39.01	कम	8
इस्लामनगर	38.95	कम	10
उसावां	38.82	कम	11
अम्बियापुर	37.93	कम	12
कादरचौक	36.17	कम	13
सहसवान	31.00	बहुत कम	14
दहगवां	25.99	अत्यन्त कम	15

स्रोत: जिला सांख्यिकी पत्रिका, बदायूँ, अर्थ एवं संख्या विभाग, उत्तर प्रदेश शासन, 2023।

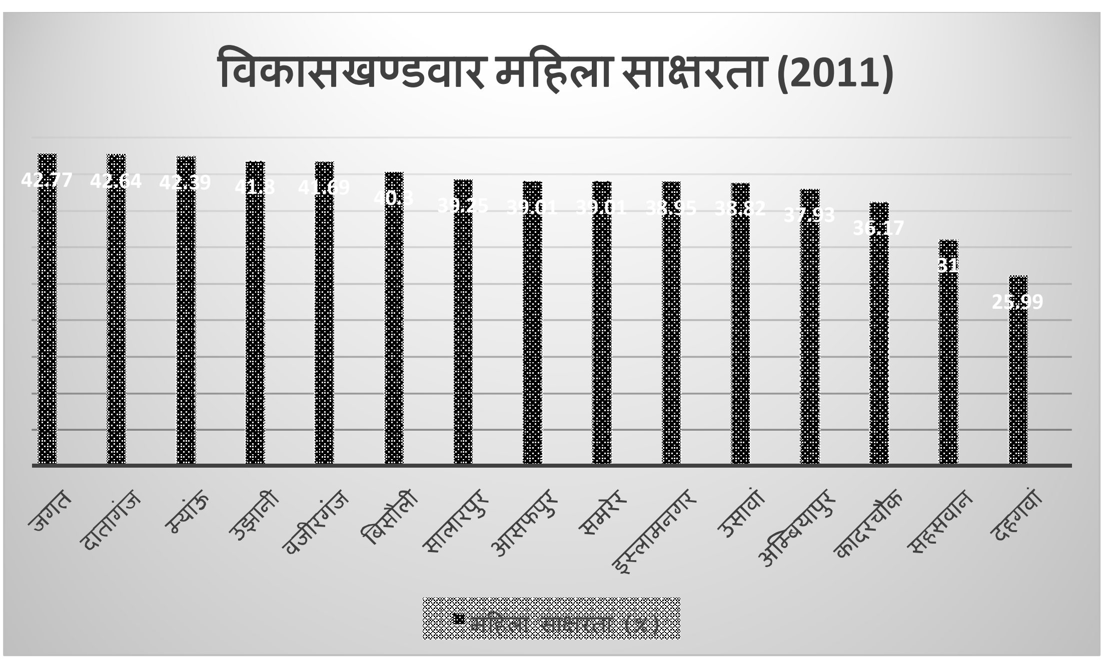

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि महिला साक्षरता का वितरण अत्यंत असमान है। अध्ययन के आधार पर विकासखण्डों को निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

(क) उच्च महिला साक्षरता वाले विकासखण्ड (41% से अधिक)

- जगत (42.77%)
- दातागंज (42.64%)
- म्यांऊ (42.39%)
- उझानी (41.80%)
- वजीरगंज (41.69%)

इन विकासखण्डों में महिला साक्षरता जनपद औसत से अधिक है। इसका प्रमुख कारण बेहतर शैक्षिक अवसंरचना, सड़क संपर्क, नगरीय प्रभाव तथा विद्यालयों की अपेक्षाकृत अधिक उपलब्धता है। इन क्षेत्रों में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों की पहुँच बेहतर होने से बालिकाओं का नामांकन एवं विद्यालय में निरंतरता अपेक्षाकृत अधिक देखी जाती है।

(ख) मध्यम महिला साक्षरता वाले विकासखण्ड (38–41%)

- बिसौली
- सालारपुर
- आसफपुर
- समरेर
- इस्लामनगर
- उसावां

इन विकासखण्डों में महिला साक्षरता जनपद औसत के आसपास या उससे थोड़ी कम है। यहाँ शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध तो हैं, परंतु सामाजिक एवं आर्थिक बाधाएँ बालिका शिक्षा को प्रभावित करती हैं। कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था तथा सीमित रोजगार अवसर भी इस स्थिति के लिए उत्तरदायी हैं।

(ग) निम्न महिला साक्षरता वाले विकासखण्ड (38% से कम)

- अम्बियापुर
- कादरचौक
- सहसवान
- दहगवां

इन विकासखण्डों में महिला साक्षरता का स्तर अत्यंत चिंताजनक है। विशेषकर **दहगवां (25.99%)** एवं **सहसवान (31.00%)** में महिला शिक्षा की स्थिति सबसे कमजोर है। यह स्थिति आर्थिक पिछड़ेपन, सामाजिक रूढ़िवादिता, बाल विवाह, निम्न पारिवारिक आय तथा माध्यमिक शिक्षा संस्थानों की सीमित उपलब्धता से संबंधित प्रतीत होती है।

विकासखण्डवार लैंगिक साक्षरता अंतर (Gender Literacy Gap Analysis)

महिला साक्षरता का वास्तविक आकलन केवल महिला साक्षरता प्रतिशत से नहीं, बल्कि पुरुष एवं महिला साक्षरता के मध्य विद्यमान अंतर से भी किया जाता है। इस अध्ययन में प्रत्येक विकासखण्ड के लिए लैंगिक साक्षरता अंतर (पुरुष साक्षरता % – महिला साक्षरता %) की गणना की गई।

तालिका 3 : विकासखण्डवार लैंगिक साक्षरता अंतर (2011)

विकासखण्ड	**पुरुष (%)**	**महिला (%)**	**लैंगिक अंतर (%)**
आसफपुर	63.29	39.01	**24.28**
इस्लामनगर	63.90	38.95	**24.95**
बिसौली	64.88	40.30	**24.58**
वजीरगंज	65.86	41.69	**24.17**
दहगवां	47.52	25.99	**21.53**
सहसवान	52.19	31.00	**21.19**
अम्बियापुर	60.95	37.93	**23.02**
सालारपुर	61.84	39.25	**22.59**
जगत	63.72	42.77	**20.95**
उझानी	63.94	41.80	**22.14**
कादरचौक	57.41	36.17	**21.24**
समरेर	60.20	39.01	**21.19**
दातागंज	62.21	42.64	**19.57**
म्यांऊ	64.17	42.39	**21.78**
उसावां	59.27	38.82	**20.45**
जनपद	**61.40**	**41.16**	**20.24**

स्रोत: जिला सांख्यिकी पत्रिका, बदायूँ, अर्थ एवं संख्या विभाग, उत्तर प्रदेश शासन, 2023।

तालिका से स्पष्ट है कि दातागंज (19.57%) में लैंगिक साक्षरता अंतर सबसे कम है, जो अपेक्षाकृत बेहतर लैंगिक शैक्षिक समानता को दर्शाता है। इसके विपरीत इस्लामनगर (24.95%), बिसौली (24.58%) एवं आसफपुर (24.28%) में यह अंतर अधिक है, जिससे स्पष्ट होता है कि इन क्षेत्रों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की शिक्षा अभी भी पीछे है।

यद्यपि दहगवां एवं सहसवान में लैंगिक अंतर अपेक्षाकृत कम है, लेकिन इसका कारण पुरुष एवं महिला दोनों की साक्षरता का निम्न स्तर है। अतः केवल कम अंतर को बेहतर स्थिति का संकेत नहीं माना जा सकता; दोनों लिंगों की साक्षरता का स्तर भी पर्याप्त होना चाहिए।

तालिका 4 : महिला साक्षरता के सांख्यिकीय सूचक

सांख्यिकीय सूचक	**मान**
विकासखण्डों की संख्या	15
औसत (Mean)	**38.51**
अधिकतम	**42.77**
न्यूनतम	**25.99**
परास (Range)	**16.78**
मानक विचलन (SD)	**4.43**
परिवर्तन गुणांक (CV)	**11.51%**

विकासखण्डवार महिला साक्षरता आँकड़ों के आधार पर लेखक द्वारा की गई गणना। मूल आँकड़े: बदायूँ जनपद, विकासखण्डवार साक्षरता, 2011.

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि बदायूँ जनपद के विकासखण्डों में महिला साक्षरता का औसत **38.51 प्रतिशत** है। मानक विचलन **4.43 प्रतिशत** होने से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश विकासखण्डों की महिला साक्षरता औसत के लगभग ±4.5 प्रतिशत अंकों के भीतर स्थित है। परिवर्तन गुणांक **11.51 प्रतिशत** प्राप्त हुआ, जो महिला साक्षरता के वितरण में **मध्यम स्तर की स्थानिक विषमता** का द्योतक है। यद्यपि अधिकांश विकासखण्ड औसत के निकट हैं, तथापि **दहगवां (25.99%)** तथा **सहसवान (31.00%)** जैसे विकासखण्ड औसत से काफी नीचे हैं, जबकि **जगत (42.77%)**, **दातागंज (42.64%)** एवं **म्यांऊ (42.39%)** औसत से ऊपर स्थित हैं। इससे स्पष्ट होता है कि जनपद में महिला साक्षरता का वितरण समरूप न होकर क्षेत्रीय असमानता (Spatial Disparity) को प्रदर्शित करता है।

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बदायूँ जनपद में महिला साक्षरता का वितरण स्थानिक रूप से अत्यंत विषम है। जनगणना 2011 के अनुसार जनपद की महिला साक्षरता **41.16 प्रतिशत** है, जो पुरुष साक्षरता (61.40 प्रतिशत) से लगभग **20.24 प्रतिशत अंक** कम है। यह अंतर स्पष्ट करता है कि जनपद में शिक्षा का लाभ महिलाओं तक समान रूप से नहीं पहुँच पाया है।

विकासखण्डीय विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि **जगत (42.77%), दातागंज (42.64%), म्यांऊ (42.39%), उझानी (41.80%) तथा वजीरगंज (41.69%)** महिला साक्षरता की दृष्टि से अपेक्षाकृत विकसित विकासखण्ड हैं, जबकि **दहगवां (25.99%), सहसवान (31.00%), कादरचौक (36.17%) तथा अम्बियापुर (37.93%)** अपेक्षाकृत पिछड़े हैं। यह अंतर केवल शिक्षा सुविधाओं का परिणाम नहीं है, बल्कि सामाजिक संरचना, आर्थिक विकास, नगरीकरण, परिवहन, विद्यालयों की उपलब्धता तथा महिला शिक्षा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण का संयुक्त प्रभाव है।

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों की तुलना से भी स्पष्ट होता है कि नगरीय महिला साक्षरता (52.66%) ग्रामीण महिला साक्षरता (38.27%) से काफी अधिक है। यह दर्शाता है कि शिक्षा का विकास नगरीय केन्द्रों के आसपास अधिक केन्द्रित है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक सुविधाओं का अभाव है।

सांख्यिकीय विश्लेषण में परिवर्तन गुणांक (CV) से प्राप्त मध्यम स्तर की क्षेत्रीय विषमता यह संकेत देती है कि यद्यपि अधिकांश विकासखण्ड औसत के आसपास हैं, फिर भी कुछ विकासखण्ड शिक्षा की दृष्टि से गंभीर रूप से पिछड़े हुए हैं। इसलिए भविष्य की शैक्षिक नीतियों में **स्थान-विशिष्ट (Area-Specific)** दृष्टिकोण अपनाना अधिक प्रभावी होगा।

09. निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बदायूँ जनपद में महिला साक्षरता के स्तर में वर्ष 1991 से 2011 के मध्य उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्ष 1991 में जहाँ महिला साक्षरता मात्र **12.82 प्रतिशत** थी, वहीं वर्ष 2001 में यह बढ़कर **26.73 प्रतिशत** तथा वर्ष 2011 में **41.16 प्रतिशत** तक पहुँच गई। यह वृद्धि शिक्षा के सार्वभौमिकरण, सर्व शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन तथा बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने वाली विभिन्न सरकारी योजनाओं के सकारात्मक प्रभाव को प्रतिबिंबित करती है। इसके बावजूद जनपद में महिला साक्षरता का स्तर पुरुष साक्षरता (61.40 प्रतिशत) की तुलना में अभी भी काफी कम है तथा लगभग **20.24 प्रतिशत अंकों** का लैंगिक साक्षरता अंतर शैक्षिक असमानता की निरंतरता को दर्शाता है।

विकासखण्डवार विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि महिला साक्षरता का वितरण जनपद में समान नहीं है, बल्कि इसमें स्पष्ट स्थानिक विषमता (Spatial Disparity) विद्यमान है। **जगत (42.77%), दातागंज (42.64%), म्यांऊ (42.39%), उझानी (41.80%) तथा वजीरगंज (41.69%)** अपेक्षाकृत उच्च महिला साक्षरता वाले विकासखण्ड हैं, जबकि **दहगवां (25.99%), सहसवान (31.00%), कादरचौक (36.17%) तथा अम्बियापुर (37.93%)** निम्न महिला साक्षरता वाले विकासखण्डों के रूप में उभरकर सामने आए हैं। इन विकासखण्डों के मध्य लगभग **16.78 प्रतिशत अंकों** का अंतर यह दर्शाता है कि महिला शिक्षा का विकास स्थानिक रूप से असंतुलित रहा है। साथ ही, सांख्यिकीय विश्लेषण में प्राप्त परिवर्तन गुणांक (CV) ने भी यह पुष्टि की कि जनपद में महिला साक्षरता का वितरण मध्यम स्तर की क्षेत्रीय विषमता को प्रदर्शित करता है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि महिला साक्षरता का स्तर केवल विद्यालयों की उपलब्धता पर निर्भर नहीं करता, बल्कि यह नगरीकरण, परिवहन एवं सड़क संपर्क, सामाजिक जागरूकता, आर्थिक स्थिति, शिक्षा अवसंरचना तथा सांस्कृतिक परिवेश जैसे अनेक कारकों से प्रभावित होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला साक्षरता (38.27 प्रतिशत) की तुलना में नगरीय क्षेत्रों (52.66 प्रतिशत) में इसका स्तर उल्लेखनीय रूप से अधिक पाया गया, जिससे यह सिद्ध होता है कि नगरीय सुविधाओं एवं बेहतर सामाजिक-आर्थिक अवसरों का महिला शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। दूसरी ओर, ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक अभाव, विद्यालयों की दूरी, बाल विवाह, पारंपरिक सामाजिक मान्यताएँ तथा महिलाओं की सीमित सामाजिक भागीदारी महिला शिक्षा के विस्तार में प्रमुख बाधाएँ हैं।

समग्रतः यह अध्ययन स्थापित करता है कि महिला साक्षरता केवल शैक्षिक उपलब्धि का संकेतक नहीं है, बल्कि यह स्वास्थ्य, पोषण, महिला सशक्तिकरण, आर्थिक आत्मनिर्भरता, जनसंख्या नियंत्रण तथा सतत मानव विकास से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है। अतः बदायूँ जनपद में महिला साक्षरता के स्तर में अपेक्षित सुधार हेतु केवल विद्यालयों की संख्या में वृद्धि पर्याप्त नहीं होगी, बल्कि पिछड़े विकासखण्डों के लिए **स्थान-विशिष्ट (Area-Specific) शैक्षिक रणनीतियाँ**, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुरक्षित एवं सुलभ परिवहन, डिजिटल शिक्षण सुविधाएँ, सामुदायिक सहभागिता तथा बालिका शिक्षा के प्रति सामाजिक जागरूकता को समान रूप से प्राथमिकता देना आवश्यक है। ऐसी समेकित एवं क्षेत्र-विशिष्ट नीतियाँ न केवल महिला साक्षरता में वृद्धि करेंगी, बल्कि जनपद के संतुलित सामाजिक-आर्थिक विकास एवं लैंगिक समानता की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देंगी।

10. नीतिगत सुझाव (Policy Recommendations)

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि बदायूँ जनपद में महिला साक्षरता का स्थानिक वितरण असमान है तथा विकासखण्डों के मध्य उल्लेखनीय क्षेत्रीय विषमता विद्यमान है। अतः महिला साक्षरता में संतुलित एवं सतत् वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए क्षेत्र-विशिष्ट (Area-Specific) एवं समावेशी (Inclusive) शैक्षिक नीतियों को अपनाना आवश्यक है। अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित नीतिगत सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं—

सबसे पहले, **दहगवां, सहसवान, कादरचौक तथा अम्बियापुर** जैसे अपेक्षाकृत निम्न महिला साक्षरता वाले विकासखण्डों को प्राथमिकता वाले शैक्षिक क्षेत्र (Priority Educational Zones) घोषित कर वहाँ विशेष महिला साक्षरता अभियान संचालित किए जाने चाहिए। इन क्षेत्रों में विद्यालयी अवसंरचना के विकास, शिक्षकों की पर्याप्त उपलब्धता तथा नियमित शैक्षिक निरीक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए।

ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा के प्रति सामाजिक जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर अभिभावक परामर्श शिविर, महिला शिक्षा जागरूकता अभियान तथा सामुदायिक संवाद कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाने चाहिए। स्थानीय जनप्रतिनिधियों, स्वयं सहायता समूहों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं तथा सामाजिक संगठनों की सक्रिय भागीदारी से बालिका शिक्षा के प्रति सकारात्मक सामाजिक वातावरण विकसित किया जा सकता है।

माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या तथा उनकी भौगोलिक पहुँच का विस्तार विशेष रूप से उन ग्रामीण क्षेत्रों में किया जाना चाहिए जहाँ विद्यालयों की दूरी छात्राओं के विद्यालय छोड़ने का प्रमुख कारण बनती है। साथ ही, दूरस्थ क्षेत्रों की छात्राओं के लिए सुरक्षित परिवहन, निःशुल्क साइकिल अथवा विद्यालय बस सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए, जिससे उनकी नियमित उपस्थिति एवं निरंतरता सुनिश्चित हो सके।

आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की बालिकाओं के लिए छात्रवृत्ति, निःशुल्क पाठ्य सामग्री, गणवेश, डिजिटल उपकरण तथा प्रत्यक्ष वित्तीय सहायता (Direct Benefit Transfer) जैसी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाना चाहिए। इससे आर्थिक कारणों से होने वाले विद्यालय त्याग (Dropout) में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकती है।

विद्यालय छोड़ चुकी किशोरियों के लिए विशेष **पुनः नामांकन (Re-enrolment)** एवं **सेतु शिक्षा (Bridge Education)** कार्यक्रम प्रारम्भ किए जाने चाहिए, ताकि वे पुनः औपचारिक शिक्षा प्रणाली से जुड़ सकें। इसके अतिरिक्त डिजिटल शिक्षा, स्मार्ट कक्षाओं, कम्प्यूटर प्रयोगशालाओं तथा इंटरनेट सुविधाओं का विस्तार विशेष रूप से ग्रामीण विद्यालयों में किया जाना आवश्यक है, जिससे छात्राएँ आधुनिक शिक्षण संसाधनों से लाभान्वित हो सकें।

महिला शिक्षकों की पर्याप्त नियुक्ति, विद्यालयों में पृथक एवं सुरक्षित शौचालय, स्वच्छ पेयजल, मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन तथा सुरक्षित एवं समावेशी विद्यालयी वातावरण की उपलब्धता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। ये सुविधाएँ बालिकाओं की नियमित उपस्थिति एवं उच्च कक्षाओं तक उनकी निरंतर शिक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
अंततः, विकासखण्ड स्तर पर महिला साक्षरता की वार्षिक निगरानी एवं मूल्यांकन (Monitoring and Evaluation) की प्रभावी व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए। प्रत्येक विकासखण्ड के लिए प्रमुख प्रदर्शन संकेतक (Key Performance Indicators) निर्धारित कर कम प्रगति वाले क्षेत्रों हेतु पृथक कार्ययोजना तैयार की जाए तथा उसके क्रियान्वयन की समय-समय पर समीक्षा की जाए। साथ ही, भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) आधारित मानचित्रण के माध्यम से महिला साक्षरता के स्थानिक प्रतिरूप का निरंतर विश्लेषण किया जाए, जिससे नीतिगत निर्णय अधिक सटीक, वैज्ञानिक एवं क्षेत्र-विशिष्ट बनाए जा सकें।

इस प्रकार, यदि उपर्युक्त सुझावों का प्रभावी एवं समन्वित रूप से क्रियान्वयन किया जाए, तो बदायूँ जनपद में महिला साक्षरता के स्तर में उल्लेखनीय सुधार के साथ-साथ लैंगिक समानता, महिला सशक्तिकरण तथा समावेशी एवं सतत् क्षेत्रीय विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति भी सुनिश्चित की जा सकेगी।

11.संदर्भ ग्रन्थ सूची (References)

1. Bhat, L. S. (1972). *Regional Planning in India.* Statistical Publishing Society.
2. Census of India. (1991). *Primary Census Abstract: Uttar Pradesh*. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.
3. Census of India. (2001). *Primary Census Abstract: Uttar Pradesh*. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.
4. Census of India. (2011). *Primary Census Abstract: Uttar Pradesh*. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.
5. Census of India. (2011). *District Census Handbook: Budaun, Part A – Village and Town Directory*. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.
6. Census of India. (2011). *District Census Handbook: Budaun, Part B – Primary Census Abstract*. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.
7. Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education.
8. Government of Uttar Pradesh. (2023). *Economic Survey of Uttar Pradesh 2023–24*. Planning Department.
9. Hussain, M. (2021). *Human Geography* (6th ed.). Rawat Publications.
10. Ministry of Education. (2023). *Unified District Information System for Education Plus (UDISE+) 2022–23 Report*. Government of India.
11. Ministry of Statistics and Programme Implementation. (2023). *Women and Men in India 2023*. Government of India.
12. National Statistical Office. (2023). *Household Social Consumption on Education in India*. Ministry of Statistics and Programme Implementation.
13. NITI Aayog. (2021). *National Multidimensional Poverty Index: Baseline Report*. Government of India.
14. Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). *Census Atlas of India*. Government of India.
15. Singh, J., & Dhillon, S. S. (2004). *Agricultural Geography.* Tata McGraw-Hill.
16. Singh, R. L. (1971). *India: A Regional Geography.* National Geographical Society of India.
17. Tiwari, R. C. (2008). *Geography of India*. Prayag Pustak Bhawan.
18. UNESCO. (2023). *Global Education Monitoring Report 2023: Technology in Education*. UNESCO Publishing.
19. United Nations Development Programme. (2024). *Human Development Report 2023/2024*. UNDP.
20. United Nations. (2022). *The Sustainable Development Goals Report 2022*. United Nations.
21. World Bank. (2023). *World Development Indicators 2023*. World Bank.

22. Yadav, C. S. (2016). *Population Geography*. Vishal Publishing House.
23. Department of Economics and Statistics, Government of Uttar Pradesh. (2023). *District Statistical Handbook: Budaun*. Directorate of Economics and Statistics, Government of Uttar Pradesh.